धर्म जीवन

सितम्बर 2004

- ✡ समय के साथ सब ठीक हो जाएगा
- ✡ क्या हम मनुष्य कहलाने के हकदार हैं?
- ✡ स्वार्थ अनुराग का बोध पाने के लिए संग्राम
- ✡ लिंकन की धुन
- ✡ कृतघ्नता महा पाप है!
- ✡ जीवन की सफलता – उपयोगिता में
- ✡ झुकने की फितरत नहीं, हार मानना सीखा नहीं
- ✡ कमाई का नया तरीका
- ✡ क्षमा मांगना बिगडी बात संवारता है
- ✡ अमरीका में शुभ संग्राम
- ✡ सत्य धर्म बोध उत्सव

2

समय के साथ सब ठीक हो जाएगा

विश्व एक है। उसका प्रत्येक विभाग एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। इसीलिए विश्व के भीतर उसकी नाना प्रकार की घटनाओं में परस्पर सम्बंध है। जहां उसमें बुरी घटनाओं की अपनी लड़ी पाई जाती है, और एक एक घटना के साथ बहुत सी बुरी घटनाएं जुड़ी हुई होती हैं, वहां उसमें भली घटनाओं की भी अपनी अपनी लड़ीयां हैं, और एक एक भली घटना के साथ कितनी हि और भली घटनाएं योग रखती हैं। मैंने देखा है कि उच्चगति में चलते समय एक वा दूसरी प्रकार की साधारण कठिनाईयों को छोड़कर मेरे रास्ते में ऐसी ऐसी दुर्घटनाएं आई हैं और ऐसी ऐसी रोकें और मुसीबतें पैदा हुई हैं, कि जिनके याद करने से भी दिल दहल जाता है। मुझे एक एक बार इस प्रकार प्रतीत होता रहा है, कि मानों मेरे पांव के नीचे से जमीन निकल जाती है और हर एक बात मेरे सम्बंध में उल्टी जा रही है। मानों दुर्घटनाओं और विघ्नों की एक लड़ी बंधी हुई है। और वह सब दुर्घटनाएं और विपदें जोरदार आवाज के साथ यह कह रही हैं, कि तुम्हारे लिये कामयाबी संभव नहीं है। ऐसी अवस्था में चारों ओर से ऐसे प्रभाव पड़ने लगे हैं, कि मेरा सब तरफों से रास्ता बंद है। कहीं से बच निकलने और उच्च उद्देश्य में सफल काम होने की मेरे लिये कोई आशा नहीं है। चारों ओर अंधकार। चारों और निराशा!! परन्तु इस महा भयानक और महा दुखदाई अवस्था के आने पर भी मेरे भीतर की ज्योति बुझ नहीं गई। और उसने मेरा साथ नहीं छोड़ा। घटाओं के छा जाने और पृथ्वी के अंधकार से आवृत्त होने पर भी, एक-एक बिजली खूब जोर से चमक कर अपनी छटा और अपनी प्रभा दिखा जाती है, उसी प्रकार मैंने महाभयानक महादुखदाई और निराशाजनक घटनाओं के धोर तम से घिरे होने पर भी, हृदय के भीतर उच्च ज्योति की चमक में, इस तत्व को बार बार देखा और अनुभव किया है, और भीतर के जोश से अपने मुंह के द्वारा भी कई बार प्रगट किया है कि समय के साथ सब ठीक हो जायेगा। (All will come right in time) और यह महा सत्य ठीक प्रमाणित हुआ है अर्थात् मेरी दुर्घटनाओं की लड़ी टूटने लगी है- विध्न घटने लगे, भय और निराशा का अंधकार विनष्ट होने लगा है, आकाश साफ हो गया है और मेरे जीवन का पथ और भी अधिक उज्जवल रूप से खुल गया है। अनुकूल घटनाएं उत्पन्न हो गई है। मेरी आन्तरिक ज्योति ने अंधकार पर मेरी सत्य निष्ठा ने असत्य पर, और मेरे शुभ भाव ने अशुभ पर जय लाभ की है। यह जैसे विश्व के विकास में अटल नियम है, वैसे ही मेरे जीवन का तजुरबा भी है। इस महा सुन्दर और अटल नियम के अनुसार उच्च गति-परायण आत्मा अंत में हमेशा अपने उच्च उद्देश्य और जीवन के उच्च पथ में विजयी होता है।

(आत्म परिचय)

धर्म जीवन

खण्ड 16 अंक 9
सितम्बर 2004
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

क्या हम मनुष्य कहलाने के हकदार हैं?

एक विचारशील नेक मुसलमान के दो पुत्र थे। उसने उनके अजीबोगरीब नाम रखे थे। एक का नाम था कुत्ता और दूसरे का नाम था बिल्ला। जब कोई बुद्धिमान लोग इन नामों को सुनते तो यह प्रश्न अवश्य करते कि इतने सुन्दर और स्वस्थ बच्चों के इतने भद्धे नाम क्यों रखें हैं। कोई खूबसूरत नाम तुम्हें नहीं मिले। इस पर वह विचारशील मुसलमान जवाब देता कि अभी तो वह कुत्ते बिल्लों की तरह ही लड़ते हैं और खाने पीने को चीज़ों पर लपकते हैं। वह अपनी क्रियाओं से अपने नाम को ही सिद्ध करते हैं, इसलिए इनके नाम ठीक ही हैं। फिर कोई पूछता कि सारी उमर बच्चे ऐसे नहीं रहते, यह हो सकता है कि बड़े होकर महान इंसान बन जाएं, क्या फिर भी यह कुत्ते बिल्ले ही कहलाएंगे। इस पर वह नेक मुसलमान पिता कहते कि यदि बड़ा नेक बन गया तो वह कुतुबदीन बन जाएगा, यदि छोटा अच्छा निकला तो वह बल्लौरदीन बन जाएगा। यदि वह नेक न बनें तो यह नाम उचित ही हैं, वह कुत्ते बिल्ले कहलाने के ही योग्य रहेंगे।

उक्त घटना बताती है कि मनुष्य के नाम का सम्बंध उसके जीवन से है। फिर यह प्रश्न उठता है कि क्या मनुष्य सचमुच मनुष्य कहलाने के योग्य है? या केवल कुछ ही मनुष्य, मनुष्य कहलाने के हकदार हैं। बाकी को मुर्तियां वा प्राणी ही कहा जा सकता है। केवल मनुष्य माता पिता के यहां जन्म लेकर मनुष्य नहीं बन जाता। मनुष्य को मनुष्य कहलाने का हकदार बनने के लिए, जीव जन्तुओं और पशुओं की तुलना में अपनी विशेषता दर्शानी चाहिए।

पशु का जीवन, शरीरिक अवश्यकताओं तक ही सीमित रहता है। वह खाने पीने चारे दाने के लिए ही जीता है, उसके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं होता। वह अपने लिए खान पान भी नहीं जुटा पाता। हालात मिलने पर वह बच्चे पैदा करता है और पालता भी है, उन्हें चुगना, चारा खाना वा

उड़ना भी सिखाता है, बस इससे बढ़कर पशु की उड़ान नहीं। पशु न अपने शारीरिक रोगों का ज्ञान पा सकता है और न ईलाज ढूंढ सकता है। पशु अपने दिमाग का विकास नहीं कर सकता। पशु अच्छे, बुरे, लाभदायक, हानिकारक वा अहिंसक भी होते हैं। यह उनका प्राकृतिक स्वभाव होता है। वह न किसी अच्छाई को देख सकता है और न उसकी प्राप्ति की उसके भीतर चाह होती है।

अब जो मनुष्य केवल शारीरिक स्तर पर ही जीते हैं, अपना कोई ऊंचा लक्ष्य नहीं रखते, शारीरिक मुल्यों से ऊपर नहीं उठते वह मनुष्य कहलाने के हक़दार नहीं। पेट पूर्ति से ऊपर उच्च कीमतों की वर्तमानता मनुष्यत्व को सार्थक करने के लिए अवश्यक है। पेट तो गोबर का कीड़ा भी भरता है। केवल पेट पूर्ति के लिए जीना पशु ही रहना है। बायलिजीकल स्तर पर जीना Vegetate करना है। grow (उन्नत) होना नहीं।

केवल अपने लिए और अपने आश्रितों की रक्षा के लिए, उनकी शारीरिक जरूरतों और शारीरिक सुखों के जुटाने के लिए जीना, पशु ही रहना है, मनुष्य स्तर पर ऊंचा उठना नहीं। न केवल यह, बल्कि कई बार मनुष्य अपने शारीरिक सुखों और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह दूसरों के अधिकारों को भी छीनता है, दूसरों के माल, जान वा इज्ज़त का भी हरन करता है, दूसरों की सुख शान्ति का अपहरण करके दूसरों की आहों पर अपने महल खड़े करता है और अपनी हवसें पूरी करता है, ऐसा करके वह पशु स्तर से भी नीचे गिर जाता है। वह हिंसक हो जाता है, वह शेर भेड़िए के स्तर पर ही आ जाता है। कई बार उससे भी नीचे गिर जाता है। दूसरों के हक वा सुख छीनकर, पर हानि से खुशी मनाकर, मनुष्य वहिशी वा दरिंदा हो जाता है। छोटी छोटी बच्चीयों से बलात्कार, गरीबों पर पैसा खर्च करने के स्थान पर घोटाले, आतंकवाद का फैलना, यह सब बातें मनुष्य को मनुष्य स्तर से गिरा देती हैं।

आगे प्रश्न होता है कि क्या मनुष्य शिक्षा प्राप्त करके मान्सिक शक्तियों का विकास करके, बड़े बड़े काम और उपलब्धियां प्राप्त करके, वैज्ञानिक अविष्कार करके पशुओं से ऊपर नहीं उठ जाता? इसमें कोई संदेह नहीं कि मनुष्य की आसाधारण मान्सिक शक्तियां बहुत ही कीमती और मुल्यवान हैं, उनके द्वारा कुछ भलाई भी आती है। परन्तु यदि मनुष्य की मान्सिक योग्यता भी मनुष्य के अपने सुखों वा शारीरिक आवश्यकताओं में ही प्रयोग हो तो मनुष्य अक्लमंद और योग्य पशु ही रहता है। वह मनुष्य होने का दावेदार नहीं रहता। केवल अपने लिए जीना मनुष्य होना नहीं पशु होना है।

फिर मनुष्य को मनुष्य कहलाने का हकदार बनाने के लिए नेचर की क्या शर्त है? इस विषय में परम पू० गुरु महाराज ने फरमाया है :-

"जब तक हृदय के भीतर यह बोध पैदा न हो कि धर्म की जिन्दगी के बिना (आत्मिक भलाई के बिना) मेरा कुछ भी नहीं, तब तक वह इंसान कहलाने का हकदार नहीं। चाहे वह कोई राजा हो, महाराजा हो और चाहे कुछ भी हो, क्योंकि (आत्मिक होश, आत्मिक उन्नति) धर्म से खाली जो जीवन है, वह जीवन केवल नीच अनुरागों, नीच घृणाओं, अंधता और कठोरता का जीवन है और क्या उसके लिए और क्या जन समाज के लिए

विनाशकारी है।"

"मनुष्य कहलाने के लिए यह अवश्यक है कि मनुष्य, शरीर के ज्ञान और बोध, मानसिक उन्नति के बोध के साथ साथ आत्मा के सम्बंध में भी बोध पावे, उसका बोधी और ज्ञानी बने। उसके जीने और मरने के नियमों का ज्ञान पावे। अपनी आत्मा को मौत से बचाने के लिए यत्नशील बने। जो आत्मिक स्तर पर जाग्रित नहीं, वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं।"

एक स्थान पर गुरु महाराज इस प्रकार फरमाते हैं :-

"यदि तुम (आत्मिक) शुभ के सम्बंध में किसी प्रकार का हार्दिक उत्तर देने के विचार से पूर्ण मुर्दा हो (अर्थात कोई कुर्बानी, त्याग से किसी सत्य या तत्व को समझ नही सकते) यहां तक कि उसके विषय में कोई उपदेश सुनकर, या कोई लेख पढ़कर भी उसको उपलब्ध या उसके सम्बंध में सच्चा ज्ञान लाभ नहीं कर सकते इसके विषय में एक या दूसरी बात स्मरण करके, उसको तोते की तरह सुना या कह सकते हो, परन्तु उसके बोधी नहीं होते, तो तुम पशुओं की तरह ही, उनके विषय में अज्ञानी और अबोधी रहते हो।"

"मनुष्य आत्मा एक शक्ति है, इसलिए शक्ति के सम्बंध में अज्ञानी वा अबोधी रहकर कोई जन अपने आत्मा के रूप, उसकी नाना गतियों, उनके फलों या नतीजों के विषय में भी अज्ञानी वा अबोधी रहता है। वह आत्मा होकर भी अपने आत्मा को नहीं देखता। धनी, विद्वान वा पद रखकर भी इस विषय में पशुओं से अधिक कोई विशेषता नहीं रखता।"

अपने आत्मा का ज्ञान न रखकर मनुष्य, मनुष्य कहलाने का हकदार नहीं बनता। अपने आत्मा की रक्षा और विकास का ज्ञान रखकर ही वह मनुष्य कहलाने का हकदार है।

जो मनुष्य अपने सुखों को त्याग करके, दूसरों के लिए उचित त्याग करते हैं, वह अपनी आत्मिक रक्षा का नियम पूरा करते हैं और मनुष्य कहलाने के हकदार बनते हैं।

शरीर और मान्सिक विकास, अपने आत्मा के भले बुरे का फिकर, मनुष्य कहलाने के लिए अवश्यक है। अपने शारीरिक सुखों के ऊपर न होकर हम पशु स्तर पर ही जीते हैं।

(बलदेव सिंह)

है गोबर का भी जो कीड़ा, है वह भी पेट तो भरता,
यही हो लक्ष्य जा मेरा, जन्म अपना यह है खोना।
हक औरों का हर लेना, वा पर पर हानि से खुश होना,
मनुष्य से भेड़िया बनना, जन्म अपना यह है खोना

स्वार्थ अनुराग का बोध पाने के लिए संग्राम

मनुष्य स्वभाव से ही स्वार्थी है। अपना स्वार्थ और घमंड देखना मनुष्य के वश की बात नहीं। परम पू० भगवान देवात्मा की रोशनी में यह सामर्थ्य है कि वह मनुष्य की इस स्वार्थी अवस्था को स्पष्ट दिखाती है और उनका बल पाकर मनुष्य अपनी छोटी छोटी गतियों का प्रकाश बोलकर वा लिखकर करने को मजबूर हो जाता है। ऐसा ही एक पत्र हम आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं, यह एक महान कर्मचारी विशेष श्रद्धा और सम्मान के योग्य श्रीमान मनोहर लाल जी का है। उनकी स्पष्टवादिता से ब्यान की अपनी छोटी छोटी गतियां हमें हमारा रूप दिखा सकती हैं। यह पत्र इस प्रकार है :-

मुझ पर स्वार्थ-अनुराग रूपी महा राक्षस का प्रबल अधिकार है। मुझे न देने में आराम और लाभ महसूस होता है। यह मेरी महा शोचनीय अवस्था है। एक दफा मेरे एक उपकारी साथी ने मुझसे छतरी मांगी तो मैंने उनको छतरी बहुत दिक्कत के साथ दी और इसीलिए दे दी कि अगर उनको छतरी न दी गई तो वह मुझे स्वार्थी ख्याल करेंगे। स्वार्थ का अनुराग तो देने नहीं देता था। यदि मैं एक मामूली सी चीज़ अपने उपकारी साथी को भी नहीं दे सकता तो इससे मेरी राक्षसी फितरत का कुछ अंदाजा लगाया जा सकता है कि मैं किस हालत में हूं। मेरे इस स्वार्थी दिल पर भगवान देवात्मा का सर्वोच्च अधिकार कहां हो सकता है जो महा कृतध्नों और दुश्मनों के हित के लिए भी बेकरार रहते हैं। मैं तो अपना मजकूरा बाला महा-पाजी नीच रूप रखकर परम उपास्य सत्य देव के लासानी देवरूप के दर्शन भी नहीं कर सकता। सचमुच तभी मुझे देवात्मा के देवरूप की उपलब्धि नहीं होती। क्योंकर मेरे दिल पर स्वार्थ की शैतानी गौरमिन्ट की हकूमत है। ये तो मैंने स्वार्थ की एक मामूली सी घटना का ज़िकर किया है। यदि मैं स्वार्थ की अपनी दास्तान सुनाऊं तो जिंदा दिल रखने वाले मनुष्य मेरी महा कृपा पात्र अवस्था पर रहम खाए बगैर नहीं रह सकेंगे और वह मुझे इससे निकालने का जरूर यत्न करेंगे।

एक दफा एक कर्मचारी ने मुझसे एक बिमार सेवक के लिए मच्छरदानी मांगीं। मेरे परले दरजे के स्वार्थी दिल ने बेअख्त्यार इंकार किया और मेरी जान निकल गई। मैं कैसा संग दिल हूं मुझे उस साथी सेवक की बिमारी भी अपील नहीं कर सकती और हमदर्दी से महरूम होने के कारण उसकी इस पहलू में मामूली सी मदद करने से भी इंकार कर देता हूं। ये स्वार्थ का अनुराग मुझे कोढ़ी बनाए रखता है। मेरे आत्मा के भीतर हमदर्दी और शुक्रगुजारी जैसे सुन्दर अंग पैदा और नश्वोनुमा होने नहीं देता। यह मेरा जानी दुश्मन है। एक दफा एक विकासार्थी ने मुझसे अपने तौर पर मौजूदा प्रिंसीपल साहब धर्म विकासालय के लिए जबकि वह बीमार थे सिर्फ 15-20 मिनट के लिए ही बैटरी मांगी, मैंने टालमटोल कर दिया। इस महापिशाच स्वार्थ के अनुराग ने एक तो मुझे कपटी बनाया। मेरे आत्मा

के भीतर सरलता जैसे सुन्दर अंग की गुंजायश को नुकसान पहुंचाया। दोहम में अपने विशेष उपकारी और हितकारी के सम्बंध में क्या साबित हआ? मैं उनके सम्बंध में नाशुकरा और निर्दयी प्रमाणित हुआ। ये मेरी निहायत ही अफसोस-नाक कृपापात्र अवस्था है। मेरे लिए कुछ सोचने और समझने का मुकाम है कि जब मैं ऐसा महादुष्ट हूं जो अपने विशेष उपकारी और हितकारी के सम्बंध में मजकूराबाला खौफनाक अवस्था रखता हूं तो मैं धर्म प्रचार कैसे कर सकता हूं। ये सब कुछ दरहकीकत ढोंग हैं। मैं प्रचार के लायक हूं ही नहीं। मेरी तो यह हालत है 'दूसरों को नसीयत खुद मियां फसीयत।' भला मैं दूसरों को कैसे बदल सकता हूं और यही और महज यही बायस कारण है कि मुझसे सच्चे मायनों में प्रचार का काम भी नहीं होता। जो कुछ मुझसे सभाओं आदि के करने का काम होता है वह सभी अहं अनुराग से होता है। जो मैं बाज़ औकात दूसरों से सेवा पाने से कतराता रहता हूं, उसमे भी अहं अनुराग ही है। वास्तव में स्वार्थ से नफरत नहीं है। अगर स्वार्थ से नफरत हो तो फिर परोपकार से रगबत होनी चाहिए। मेरे भीतर दया, अभाव निवारण, कृतज्ञता, श्रद्धा और आत्महित विषयक कोई परोपकार का भाव है ही नहीं। दरहकीकत अभी तो स्वार्थ का बोध भी नहीं है। भगवान देवात्मा की अपार कृपा से मुझे मान्सिक तौर पर अपना आप स्वार्थी मालूम होता है। दिल यह चाहता है कि इसका बोध हो और उसके लिए मैं जहां अपनी स्वार्थमूलक गतियों को खुद सम्मुख लाकर अपने आपको ताड़ना झाड़ना चाहता हूं वहां अपने आपको ताड़ते झाड़ते समय ऐसी गतियों को असल रूप में देखने के लिए भगवान देवात्मा के दरबार में बार बार देव ज्योति के लिए प्रार्थी होता हूं और यह भी चाहता हूं कि उच्च घृणा और उच्च दु:ख उत्पादक देव तेज का महा दुर्लभ दान मुझ तुच्छ को प्राप्त हो क्योंकि दरहक़ीकत उन्हीं के देव प्रभावों से स्वार्थ का बोध होगा। इसलिए उन्हीं के दरबार में बार बार गिड़गिड़ाता हूं।

एक दफा विशेष श्रद्धा व सम्मान के योग्य श्रीमान धर्म बल जी जो कि मेरे विशेष उपकारी और विशेष हितकारी थे और जिनकी बदौलत मैंने भगवान देवात्मा का दरबार देखा, उनके सामने से मैं इसलिए न गुजरा कि वह मुझे कहीं कुछ काम न कह देंवें। स्वार्थ मुझे दरहकीकत परले दर्जे का पागल बनाता है। भला अगर मैं ऐसे विशेष उपकारी के भी जरा सा काम आना नहीं चाहता तो मैंने फिर क्यों ख्वावख्वाह घर बार छोड़ा है? मैं महा नीच इस भयानक शत्रु के कब्जे में आकर अपने आत्मा की मूल शक्तियों, शरीर निर्माणकरी शक्ति का दिवाला निकाल रहा हूं। भला जब मैं उच्चगति उत्पादक निर्माणकारी काम ही नहीं करता तो फिर मेरी निर्माणकारी शक्ति का दिवाला न निकलेगा तो और क्या होगा।

स्वार्थ-अनुराग मेरे भीतर उच्च भाव पैदा नहीं होने देता। मुझे पर की दुनियां में प्रवेश नहीं करने देता। मैं कुंए का अंधा मेंढक बना हुआ हूं। मुझे समुन्दर का कुछ पता ही नहीं और न ही इस का यकीन आता है कि कोई पर की भी दुनियां है। रूहानी हमदर्दी तो दर किनारे मेरी भीतर जिस्मानी हमदर्दी का भी नाम निशान नहीं। मेरी जिन्दगी पुराज ख़तरा है। मैंने बहुत सा समय खो लिया है। एक दफा लुधियाना स्टेशन के प्लेटफार्म पर मौजूद था। वहां पर एक फक़ीर जो कि शायद बिमारी के बायस टट्टी से लथपथ था, अपने हाथ में अपनी

लुटिया लिए चिल्ला रहा था कि कोई जन मुझे लुटिया में पानी पीने के लिए ला दे। टट्टी की बदबू की वजह से किसी को उसके पास में जाने की हिम्मत न होती थी। पहले तो मेरे दिल में आया कि मैं पानी ला दूं। फिर मैं भी टट्टी की बदबू के कारण न जा सका। मैं दरहकीकत स्वार्थ से बंधा हूं। मुझे स्वार्थ के प्रबल अधिकार ने नबीना और बहरा बना दिया है। मुझे किसी दुखिया की दुखी हालत दिखाई नहीं देती और न ही किसी दुखिया की दु:खभरी आवाज सुनाई देती है। मैं रूहानी लिहाज़ से टुंडमुंड हूं।

चंद दिनों का वाक्या है कि मेरे दिल में यह ख्याल गुजरा कि फलां जन मुझसे फलां चीज़ लेने के लिए आ रहा है। इस पर मैंने ख्याल किया कि उसके मांगने पर फिर इंकार करना मुश्किल हो जाएगा इसलिए झटपट कमरे के दरवाजे को ताला लगा कर किसी और जगह चला गया। देखो! स्वार्थ मुझे क्या क्या निहायत कमीना नाच नचाता है। मेरे अंदर सारा दिन ही नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के मोहलक ड्रामे होते रहते हैं। मैं एक और वाक्या का जिकर करना चाहता हूं जिसको पढ़कर जिन्दादिल रखने वाले इंसानों के रोंगटे खड़े हो जायेंगे और फिर मेरी निहायत ही कमीनी महाकृतध्न और महानिर्दयी हालत भी आप पर अच्छी तरह से वाज़ह हो जायेगी। एक दफा लुधियाना में मेरे श्री दादा जी बिमार थे। उनके बुलाने पर बिमारी में उनकी सेवा करने के लिए मैं उनके पास चला गया। मेरा न तो उनके साथ कोई नीच बंधन था और न ही शुक्रगुज़ारी और हमदर्दी का भाव था। इसलिए मैं उनकी सेवा किस लिए कर सकता था। अहं अनुराग का मारा चला तो गया। उनकी दमे की बिमारी थी। दो रातें ही जब उनके पास बैठने का मौका हुआ तो मुझे नानी याद आ गई। फिर एक दिन मेरे महा-पाजी और पिशाच हृदय में यह ख्याल गुजरा कि यह मर जायें तो अच्छा है ताकि मैं सेवा करने से छूट जाऊं। हाय! हाय! मैं स्वार्थ की गुलामी के कारण कैसी परले दरजे की .... हालत में पहुंच गया। मैं दरहकीकत महा चंडाल हूं। मैं महा राक्षस, महापिशाच और महा अधम वजूद हूं जो मैं अपने जन्मदाता श्री दादा जी के सम्बंध में भी ऐसे महा कृतध्नतामूलक चिंता कर सका। अगर कोई जन किसी और जन को कत्ल कर दे तो वह फांसी का अधिकारी हो जाता है। मैं अगरचे क्रिया तो नहीं कर सका परन्तु मेरे महा दुष्ट और महाचंडाल हृदय में यह चिंता तो गुजर गई कि यह मर जायें तो अच्छा है ताकि मैं उनकी सेवा करने से छूट जाऊं। मैं महा कृतध्न, परले दरजे का जालिम और सैयाद हूं। मैं दरहकीकत अपनी चिंता की सजा में फांसी पर लटकाए जाने के लायक हूं। मैं दरिन्दों से फड़वाये जाने के लायक हूं। मैं शर्मसार किए जाने के लायक हूं। हे आत्मिक जगत के सूरज भगवान देवात्मा ! आप मुझ पर अपने महाहितकर देवप्रभावों का जादू कर रहे हैं और मेरे भीतर यह भी प्रेरणा पैदा कर रहे हैं कि मुझे आपका जो भी दान मिले मैं उसको छुपाकर न रखूं, मैं स्वार्थी न मरूं वरना वह दान भी मिलना बंद हो जायेगा जहां आपके दान को खुदगर्जी के भाव से औरों तक तहरीर और तकरीर वा दोनों के जरिये पहुंचा सकूं और आपकी महिमा महान करूं। आपके देव प्रभावों की हितकर महिमा और परम आवश्यकता औरों पर प्रगट कर सकूं, वहां इसमें अहं अनुराग की खोट (जहर) न मिलाऊं वरना यह महादान मुझसे छिन जायेगा। फिर

मैं अपने पहले तजुरबों की तरह हाथ मलता रह जाऊंगा। हे सत्गुरु! आपके दरबार में दीनतापूर्वक यह प्रार्थना है कि मैं क्या कलम और जुबान से आपको जो दान मुझे मिले उसको अपने यश और अपयश, और दुःख और सुख की परवाह न करते हुए बिना किसी लालच और डर के बेधड़क होकर औरों तक पहुंचा सकूं और उसमें भी अगर आपकी देव ज्योति जैसी विचित्र ज्योति मुझे मिलती रही और मेरी रहनुमाई करती रही तो मैं अहं अनुराग रूपी जहर मिलाने से बच सकता हूं, वरना मुझ पागल और परले दरजे के बेवकूफ के लिए ये ऐन मुमकिन है कि मैं इस जहर को खाकर तबाह हो जाऊं तब मैं ऐसी हालत में रहने के लिए संग्राम कर सकूं जिसमें मेरे जीवन का जहाज नीचरागों और नीच घृणाओं से पैदा शुदा अंधकारमय रात्रि में सफर करता हुआ आपके राशनी के मीनार की तरफ मुंह रख सके तभी मेरी खैर है वर्ना बचने की कोई आशा नहीं है।

मेरी सब ज़रूरियाते – ज़िन्दगी देव समाज से पूरी होती हैं। क्या मेरा जिसम और क्या मेरी आत्मा दोनों ही देव समाज के जरिए रक्षा पा रहे हैं और इसकी बदौलत ही मेरी पालना हो रही है। तब मैं अगर पूरी पूरी तनदेई के साथ देव समाज के काम नहीं आता जैसा कि नहीं आता तो मैं दरहकीकत देव समाज के सम्बन्ध में बेईमान, चोर, ठग और बेवफा हूं। समाज में जो रुपया आता है वह साथी सेवकों और पब्लिक का है। अगर मैं सच्चे मानों में साथी सेवकों और पब्लिक के काम नहीं आता, उनकी बेहतरी में काम नहीं आता (जैसा कि दरहकीकत नही आता) तो मैं उनके सबंध में भी बेईमान, चोर ठग और बेवफा प्रमाणित हो रहा हूं। मेरा वजूद अपना नही है यह मेरी जाति से है यह मेरे देश के अन्न और जल से पला है। मेरा यह वजूद मनुष्यमात्र से बेहद फैज़याफ्ता है। यह मेरा गठनप्राप्त जिन्दा शरीर और उसके भीतर जिन्दा शक्ति विशिष्ट अस्तित्व है वह सारे का सारा इस नेचर से ही पैदा हुआ है और अब भी उसी की बदौलत कायम है और उसके विकासकारी नियमों को पालन करने से कायम रह सकता है। तब मेरा अस्तित्व दरहकीकत मेरा नहीं है। यदि मैं इसे मेरी जाति, मेरे देश और मनुष्यमात्र और इससे भी आगे सारी नेचर के विकास कारज में लगा दूं तभी मैं दयानतदार कहला सकता हूं वरना मैं तो दयानतदार भी नही रहता। मेरी चूंकि ऐसी ही अवस्था है इसलिए मैं तो उनके सम्बंध मे आमानत में ख्यानत कर रहा हूं। मैं उनके सम्बंध मे बददयानत, चोर, ठग, अहसान फरामोश और बेवफा साबत हो रहा हूं जो कि मेरी निहायत ही कृपामात्र अवस्था है, जो कि निहायत ही शरमनाक अवस्था है। मेरी ऐसी निहायत और महानीच अवस्था को एकमात्र परम पूजनीय भगवान देवात्मा ही बदल सकते हैं और किसी के अंदर सामर्थ्य नहीं है। वही एकमात्र ऐसी अलौकिक सामर्थ्य के मालिक है, वह महाबली हैं। जिस प्रकार से उन्होंने मेरे भीतर और किसी किस्म का उच्च परिवर्तन पैदा किया है उसी प्रकार वह स्वार्थ की महा खौफनाक गुलामी से भी मेरा छुटकारा कर सकते हैं। जो नियम मेरी जिन्दगी में पहले पूरे हुए हैं जिनके पूरे होने से भगवान देवात्मा की महा आश्चर्य जनक देव तासीरों के जरिया मेरे भीतर कई प्रकार का अलौकिक उच्च पवित्तन आया है और वह ऐसा परिवर्तन है जिसको न मेरा कोई सम्बन्धी ला सकता था और न मैं खुद ही ला

सकता था, न ही कोई और कहलाने वाला ईश्वर खुदा परमात्मा वाहगुरू अल्लाह ब्रह्म विष्णु और शिवशंकर ऐसा उच्च परिवर्तन ला सकता था और न ही कोई गुरु पीर सिद्ध बुद्ध तीर्थकर कोई अवतार मिथ्या देवी और मिथ्या देवता ला सकता था और न ही अब ला सकता है और न ही कोई आयन्दा ला सकेगा। काश! कि मैं उन नियमों को ज्यादा से ज्यादा जानूं और अपने जीवन में पूरा करूं ताकि मेरे जीवन में और उच्च परिवर्तन पैदा हो सके यानि मैं अपने भीतर के शत्रुओं (नीच रोगों और नीच घृणाओं) से मोक्ष हासिल करने और अपने भीतर आत्मिक बल उत्पादन उच्च व सर्वोच्च सात्विक भावों के पैदा और नशोनुमा करने का सच्चा ख्वाहिशमंद बन जाऊं मेरी ऐसा आरजू है। काश! कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा और इस लोक वासी और परलोकवासी उच्च धर्म सम्बंधी और नेचर की अन्य सहायकारी शक्तियां किसी प्रकार मुझ तुच्छ और मेरे बेशकीमत वजूद की रक्षा और सहायता कर सकें और मेरे मजकूराबाला मकसद में किसी प्रकार जल्द से जल्द मददगार बन सकें। तभी मेरे जन्म लेने का उद्देश्य सच्चे मानों में सफल और सार्थक हो सकता है और नहीं तो मुझे इस दुनियां को छोड़कर सैंकड़ों और हज़ारों सालों तक सड़ सड़ कर और घुल घुल कर तपेदिक के मरीज की तरह अपनी जुदाराना हस्ती को महा दुःखों और बेहद आज़ाबों में से गुज़ार कर नष्ट करना पड़ेगा।

मनोहर लाल

लिंकन की धुन

लकड़ी के केबिन में जन्म लेने वाले अब्राहम लिंकन को तरह तरह की किताबें पढ़ने का बड़ा शौक था। सड़क किनारे सरकारी लालटैनों के नीचे बैठकर पढ़ने वाले लिंकन को एक ऐसी लाइब्रेरी की तलाश थी, जिसमें कानून की ढेर सारी किताबें हो। उन्हें पता चला कि नदी के उस पार एक रिटायर्ड जज रहते हैं और उनके पास ढेरों किताबें हैं। लिंकन ने किराए की एक नाव ली और चल पड़े नदी के उस ओर। रास्ते में नाव एक पत्थर से टकराकर टूट गई, तो लिंकन बर्फीले पानी में तैरते हुए उस पार जा पहुंचे।

काफी तकलीफ उठाकर जज साहब का मकान ढूंढा, पर वे घर पर नहीं मिले। मकान खुला हुआ था, जो सूखे पत्तों और धूल से गंदा हो चला था। लिंकन ने घर की सफाई की। किताबों से धूल हटाई और सभी चीज़ों को करीने से सजा दिया। घूम घामकर जज साहब वापस लौटे तो घर का हुलिया बदला हुआ पाकर दंग रह गए। दुबले पतले लिंकन ने नमस्कार किया और विनम्र भाव से कहा, 'क्षमा करें, जज साहब। आपके घर की सफाई मैंने ही की है। ऐसी सफाई मैं रोज कर सकता हूं। आपके लिए खाना पका सकता हूं और आपकी सेवा कर सकता हूं।' लिंकन की धुन व लगन से जज साहब प्रभावित हुए तथा शुरू हुआ लिंकन की जिंदगी का एक नया चैप्टर।

किताबें पढ़ पढ़ कर लिंकन कानून के विद्वान बन गए। इसका असर स्प्रिंगफील्ड की अदालतों में दिखाई दिया, जहां लिंकन के सामने विरोधी पक्ष के वकील ठहर ही नहीं पाते थे। लिंकन ने लगन और संकल्प के बूते खुद को ऊँचाईयों पर पहुंचाया।

11

कृतघ्नता महा पाप है!

जैसे शारीरिक रोग कोई भी हो, वह दुख, पीड़ा और हानि ही लाता है, परन्तु कैंसर जैसा रोग हो जाए तो उसका दुख इतना अधिक होता है कि जो रोगी की अपनी जिन्दगी और उससे सम्बन्धित और जनों के जीवन को दिनों में ही नर्क बना देता है। इसी प्रकार मनुष्य के भीतर के सब नीच भाव ही दुख और नर्क पैदा करते हैं, परन्तु कृतघ्नता का दर्द, पीड़ा और उससे पैदा हुआ नर्क असहनीय है, आत्मिक रोगों में कृतघ्नता का रोग महा भयानक है। मनुष्य की स्वार्थी प्रकृति ही ऐसी है कि वह जितनी अधिक सेवा जिससे पाता है, उसे और पाने का इच्छुक बनता जाता है, और जब किसी कारण से वह सेवा नहीं मिल पाती यह उसकी इच्छानुसार उतनी नहीं मिलती तो वह अपने उपकारियों और हितकारियों को सताने वाला बन जाता है।

मनुष्य की अवस्था सचमुच उस जन की तरह है, जिसने शेर पाला हुआ था, उसकी बच्चों की तरह सेवा करता था। एक दिन उसके एक जख्म हो गया, शेर ने उसको चाट लिया, बस उसके मुंह को खून लगने की देर थी कि वह अपने मालिक द्वारा पाई हुई सब सेवाएं भूल गया और ज़ख्म के चाटने से जो सुख मिला, वह अपने मालिक को मार कर खा गया। ठीक इसी प्रकार कृतघ्न मनुष्य भी करते हैं अपने उपकारियों से सेवाएं पाते रहते हैं और तब तक बड़े शुक्रगुजार नज़र आते हैं। परन्तु ज्यों ही उनकी इच्छा के अनुसार सुख ने मिले तो सांप की तरह फण निकाल लेते हैं। फिर अपने उपकारियों को सताने, उनकी निन्दा करने, उनकी निन्दा सुनने में खुशी प्राप्त करते हैं। यहीं बस नहीं उनको हानि पहुंचा कर अपने नीच भावों की तृप्ति करते हैं।

एक बार किसी जन ने महात्मा ईश्वर चन्द्र विद्या सागर को आकर कहा था कि अमुक जन आपको गालियाँ निकाल रहा है, तो विद्या सागर सोच में पड़ गए कि मैंने उसकी कोई सेवा नहीं की। फिर वह मुझे गालियां क्यों निकाल रहा है। इस महापुरुष ने यह बात कहकर मानवता की एक घिनौनी परन्तु सत्य तस्वीर खींची है कि जिसकी सेवा करो, वही सबसे बड़ा दुश्मन बन जाता है।

यह सच्चाई हमें रोज़ाना ज़िन्दगी में देखने को मिलती है। सबसे बड़ी कमी जो मनुष्य मात्र में है वह यह कि कृतज्ञता का भाव बड़े बड़े जनों में नाम-मात्र भी नहीं होता। शारीरिक उपकार पाकर, उनको भूल जाना भी बहुत बड़ा गुनाह है, मानसिक उपकार उससे उच्चे श्रेणी के उपकार हैं, उन्हें पाकर भूलना उससे बड़ा गुनाह है। परन्तु आध्यात्मिक उपकार पाकर भूल जाना तो अपनी मौत को बुलावा देना है। शारीरिक और मानसिक उपकार करने वाले बहुत मिल जाएंगे, परन्तु आध्यात्मिक उपकार करने वाले बहुत विरले होते हैं, जब मनुष्य उनके प्रति ही कृतघ्न बन जाता है, तो उसके सर्वनाश का राह खुल जाता है। अध्यात्मिक उपकार करने वाले तो उच्च कोटि के जन होते हैं, उनकी हानि नहीं होती, बल्कि उनके प्रति कृतघ्न बनकर ऐसे जन की सबसे बड़ी हानि यह होती है कि वह और अध्यात्मिक उन्नति करने से वंचित हो जाता है,

जो सबसे बड़ी हानि है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा सबसे बड़े अध्यात्मिक परम उपकारी है। उनसे अथाह हित पाने वाले जन जब उनके प्रति कृतघ्न बनें तो एक और उनके देव हृदय पर जो आघात लगे उनका तो हम लोग अनुमान भी नहीं कर सकते, परन्तु उन कृतध्नों ने जो हानियां उठाई, उनकी दास्तान हमारे सामने हैं। क्या देव रत्न क्या धर्म पाल और ऐसे ही अन्य जनों ने अपनी शारीरिक, मानसिक और सबसे बढ़कर आध्यात्मिक महा हानि की। उनके वजूद अनुचित दुखों के स्वयं ही भागी बन गए।

कृतज्ञता प्रगट करने या कृतज्ञता के भाव को उन्नत करने से हम इन महाहानियों से बच सकते हैं। जिन उपकारियों ने हमें पूजनीय भगवान के देव प्रभाव पाकर उनके संदेश को हम तक पहुंचाया, जिन्होंने लम्बे सफर कर करके, कष्ट उठाकर, भूखे प्यासे रहकर हमें मिथ्या और पाप के गढ़े से निकाला है, यदि हम उनको याद नहीं रख सकते, उनके हृदयों को दुख पहुंचाते हैं, तो हम अपनी आत्मिक मृत्यु को न्योता दे रहे हैं। मैं तो सदा यह अनुभव करती हूं कि यदि किसी उपकारी के प्रति उपकृत समझकर कृतज्ञ न बनूं तो कम से कम उपकारियों को दुख ही न पहुचाऊँ, तो शायद कोई भलाई का रास्ता निकल सके, परन्तु मनुष्य प्रकृति बहुत भयानक है। यह पहचानना भी कठिन है कि अध्यात्मिक जगत में सचमुच हमारा उपकारी कौन है? यदि हम आत्मा का कुछ भी भला करना चाहते हैं तो यह प्रश्न बार बार करने की आवश्यकता है ऐसे उपकारियों के प्रति कृतज्ञता पैदा करके हम और अध्यात्मिक उपकार पाने के योग्य हो सकेंगे, नहीं तो धीरे धीरे कठोर होकर जो लाभ प्राप्त कर सकते थे उनसे भी नीचता हो जाएगी। कृतध्न होकर आयोग्य होकर आत्मा का नाश अवश्य कर लेंगे।

यह लिखते लिखते मुझे एक तरफ अपने शारीरिक और मानसिक उपकारी नज़र आ रहे हैं और उनके प्रति कभी कृतघ्न बनकर उनके दिलों को तड़पाने का हेतु न बनूं, यह भावना गहरी हो रही है, दूसरी तरफ अपने उन अध्यात्मिक उपकारियों की सुन्दर छवि मेरे दिल को हिला रही है, बरबस आंखों में कृतज्ञता के आंसु आ रहे हैं, जिन्होंने मेरा, मेरे परिवार का अध्यात्मिक हित साधन किया है। वह देवता पुरुष श्रद्धेय श्रीमान मेवा सिंह जी, श्रीमान हरनाम सिंह जी, श्रीमान नेत राम जी, श्रीमान गुरुबख्श सिंह जी आदि उच्च कर्मचारी थे जो किस प्रकार सर्दी गर्मी की परवाह न करके बिस्तरे सिरों पर उठाकर, बूढ़ी उमर में हम अनजान परिवारों में पहुंचे, पूजनीय भगवान के देव प्रभाव पहुंचाने की उनकी व्याकुलता ने हमारी काया कल्प कर दी। यदि वह यह कुर्बानी न करते तो आज मैं अपने परिवार और अपनी हालत की कल्पना कर सकती हूं। मेरी जन्मजात योग्यता दुनियादार लोगों के बीच में खत्म हो जाती। उनकी व्याकुलता ने मेरे श्रद्धेय पिता जी को बचाया और सारे परिवार को बचावनहार जहाज पर सवार कर दिया। हमारी मानसिक उन्नति हुई और पापों मिथ्याओं का जो गहरा समुद्र विश्व में बह रहा है, उससे हमारी रक्षा हुई। हम ग्रामवासियों ने कहा आत्मा का नाम सुनना था, विज्ञान मूलक शिक्षा को समझने उसको लिखने वा बोलने के योग्य होना तो बहुत दूर की बात है। ऐसे उपकारियों को मैं आज याद करके उनके चरणों में

अपना शीश रखकर बार बार धन्यवाद दे रही हूं। उनकी याद पवित्र खुशी के हृदय को उद्वेलित कर रही है। यदि मैं ऐसे उपकारियों को भूल जाऊँ और कृतघ्न बन जाऊँ तो मेरा कहां भला हो सकता है। यदि उनके दिल को दुखाऊं तो मेरा आत्मा कहां बच सकता है। यदि उनकी निन्दा सुनुं या करूं तो मेरा सर्वनाश आवश्यक है। कहते हैं कि एक घर तो डायन भी छोड़ देती है। परन्तु हम कृतघ्न मनुष्यात्मा अपने आध्यात्मिक उपकारियों को भी नहीं छोड़ते।

इससे आगे यह भी नज़र आता है कि उनके प्रति कृतज्ञता का कोई साधन कर सकूं। इस बात की तो संतुष्टि है कि मैंने इन आत्माओं को कभी सताया हो, ऐसा मौका ही नहीं मिला, एक तो उमर छोटी थी, दूसरा किसी बड़े और उपकारी के प्रति अपमान जनक व्यवहार करना मुझे कभी भी गवारा नहीं हुआ, परतु इसके साथ साथ शुक्रगुजारी के कोई साधन भी नहीं किए। बचाव में आज्ञापालन के तौर पर कभी किसी को खाना खिलाने आदि की सेवा हो गई हो, वह अलग बात है। परन्तु उनके उस आध्यात्मिक उपकारी रूप को सामने लाकर उनकी कोई सेवा नहीं की। उनके इस उपकारी रूप को सामने लाकर बार बार उनको याद नहीं किया। कामनाएं नहीं की। अब उन लोगों के परलोक चले जाने के बाद और कोई सेवा तो सम्भव नहीं, परन्तु उपकारियों के उपकारों को याद करना भी अच्छी बात है, परन्तु उस इवज़ में उनकी सेवा याद करके, कामना के साधन करने से ही कृतज्ञता की जो थोड़ी सी पूंजी मिली है, उसका विकास हो सकता है। मैं इस भाव को गहरा करने के लिए उच्च साधनों में पड़ सकूं और परलोक में जाकर उन उपकारियों को मिलकर अपना मुंह दिखाने के योग्य हो सकूं, उनकी सेवा करके अपने इस भाव को तृप्त कर सकूं।

कृतज्ञता के सम्बंध में एक उच्च आत्मा के भजन के द्वारा प्रगट किए हुए यह उद्‌गार बार बार याद आ रहे हैं, जो इस प्रकार हैं :-

बची हूं जिनकी कृपा से, उन्हें मैं भूल जाऊँ न।
कहीं बन कर कृतघ्न मैं, उन्ही का दिल दुखाऊँ न।
उठाए दुख हैं जिन उपकारियों ने मेरे शुभ खातिर।
कभी मैं अपने अहं से, उन्हीं को ही सताऊँ न।
झुकाऊँ शीश मैं अपना, सदा ही उनके चरणों में।
जो पाई बरकतें उनसे उन्हें मैं भूल जाऊँ न।
मुझे प्रभाव दे गुरु के, किया जीवन में परिवर्तन,
निकाला जिस अवस्था से, उसी में फिर मैं जाऊं न।

-सुरजीत बराड़

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 2716914

जीवन की सफलता – उपयोगिता में

दसवीं कक्षा में एक बहुत सुन्दर कविता है। जिसमें लिली के छोटे से फूल की तुलना बड़ के वृक्ष से की गई है। लिली के छोटे फूल की उमर एक दिन की होती है। उसमें कवि ने यह समझाने का यत्न किया है कि मनुष्य के जीवन की सफलता उमर से नहीं, उसके जीवन की उपयोगिता से है।

कई जन बहुत लम्बी उमर पाकर भी सारी उमर अपने स्वार्थ से ऊपर नहीं उठते, यहां तक कि महत्वपूर्ण पद रखकर भी, जहां उन्हें बहुत उपयोगी काम करने का लम्बा समय मिलता है, वह अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगे रहते हैं, न केवल उस पद की गरिमा को बनाए नहीं रखते बल्कि अपने कार्यों के द्वारा कई प्रकार से हानिकारक सिद्ध होते हैं। इसमें साधारणत: दो बातें हाती हैं, एक अयोग्यता और दूसरा स्वार्थ। यह दोनों कमियां रखने वाला जन किसी बड़े से बड़े पद को प्राप्त करके भी कोई लाभदायक फल पैदा नहीं करता। यही कारण है कि जिस विभाग में ऐसे जन आ जाते हैं, आने वाले जनों के लिए बेहद कठिनाईयां पैदा हो जाती है। उनकी पैदा की हुई समस्याओं को सुलझा पाना बेहद कठिन हो जाता है। हमारे देश में ऐसे जनों की भरमार है। हर क्षेत्र में जोंक की तरह चिपटे हुए हैं। यही कारण है कि देश में उन्नति के बेशुमार साधन रखकर भी देश पतन की ओर बढ़ रहा है। घोटालों का बोलाबाला है। सरकारें आती हैं चली जाती हैं। परन्तु कठिनाईयां दिन पर दिन बढ़ती चली जाती हैं। यही हालात समाजों और अन्य संस्थाओं में हैं।

फिर भी कुछ ऐसे जन अवश्य होते हैं जो थोड़ी सी ज़िन्दगी में, थोड़े कार्यकाल में अपने कारनामों की सुगन्धि बिखेर जाते हैं।

शिक्षा विभाग में कुछ वर्ष पहले एक लड़की मिस दुग्गल आई, वह 2 – 3 वर्ष रही, परन्तु न्याय और काम की स्फूर्ति का उन्होंने एक कीर्तिमान स्थापित कर दिया। उनकी याद भुलाए नहीं भूलती। वह Joint Education Secretary थी शिक्षा विभाग का काम सब तरह से तेज रफतार से चल पडा था। वह जहां भी जाऐंगी अपनी सुगन्धि बिखेरेंगी।

प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू जी की मृत्यु के बाद प्रधानमंत्री बनने के लिए कई लाईन में थे। उस समय श्री लाल बहादुर शास्त्री जी एक ऐसा व्यक्तित्व था जो विवादास्पद नहीं था। बेशक देश के आम लोग उनको अच्छी तरह से जानते भी नहीं थे। बहुत छोटा कद, बहुत दुबला शरीर, परन्तु उसमें एक सुन्दर और बलवान हृदय था। उन्होंने थोड़े से समय में हर क्षेत्र में तहलका मचा दिया। किसानों मे सुधार के लिए, फौज का मनोबल बढ़ाने के लिए, "जय जवान जय किसान" का नारा लगाया। बहुत सहनशीलता दिखाई, परन्तु जब जरूरत अनुभव हुई, पाकिस्तान को नाकों चने चबा दिए। देश की अनाज की कमी को पूरा कने के लिए सारे देश में सप्ताह में एक दिन अनाज का प्रयोग न करने की ऐसी प्रेरणा दी कि लोग खुशी खुशी उनके साथ हो लिए। कद भी छोटा, शरीर कमजोर, छोटी उमर, प्रधान मन्त्रित्व का छोटा काल परन्तु इस सबके साथ उन्होंनें जो सुगन्धि बिखेरी उसके सामने अब घोटालों में फंसे हमारे 80 – 80 साल के नेता अपनी 50 – 50 वर्ष की राजनैतिक उम्र रखकर भी बौने नज़र आते हैं। पहलवान उनके सामने कमज़ोर नज़र आते हैं। ऐसे जन अमर हो जाते हैं और औरों के लिए प्रेरणा पुंज होते हैं।

– सुरजीत बराड़

झुकने की फितरत नहीं, हार मानना सीखा नहीं

अरुंधति रॉय का पूरा नाम सुजेन अरुंधति रॉय है। उनका जन्म 24 नवम्बर 1961 में बंगाल में हुआ। बंगाली हिंदू पिता और केरल की क्रिश्चियन मां की संतान अरुंधति रॉय अपने पिता से गिनी चुनी बार ही मिली है। बचपन में ही अरुंधति अपनी मां मैरी रॉय के साथ केरल आ गई और यहीं उनकी प्राथमिक शिक्षा हुई। बाद में उन्होंने दिल्ली के स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर में भी शिक्षा प्राप्त की और एक आर्किटेक्ट के रूप में अपना कैरियर शुरू किया।

बहुमुखी प्रतिभा की धनी अरूंधति को किसी एक छवि में बांधा नहीं जा सकता। आर्कटिक्ट, स्क्रिप्ट राइटर, एकट्रेस एरोबिक इंस्ट्रूकटर, लेखक और समाजसेवी अरूंधति को क्रांतिकारी सोच अपनी मां से विरासत में मिली है। मैरी रॉय ने क्रिश्चियन उत्तराधिकार कानून मे महिलाओं के साथ किए गए भेदभाव के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में केस लड़ा और उनके पक्ष में फैंसला दिया और क्रिश्चियन उत्तराधिकार कानून मे संशोधन किया गया।

अरुंधति रॉय को उनके उपन्यास 'द गॉड ऑफ स्माल थिंग्स' के लिए प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार मिला है। इस पुरस्कार से सम्मानित होने वाली वे पहली भारतीय महिला हैं। इस उपन्यास की देश विदेश में लगभग 60 लाख प्रतियां बिक चुकी हैं। उपन्यास के अलावा उन्होंने 'इन व्हिच एनी गिव्स व इट दोज वन्स' एवं 'इलैक्ट्रिक मून' की स्क्रिप्ट भी लिखी है। इससे पहले वे दिल्ली में ऐरोबिक सिखाती थी। अरुंधति ने प्रदीप कृष्ण की फिल्म 'मैसी साहब' में आदिवासी लड़की की छोटी सी भूमिका भी की है। नर्मदा बचाओ आंदोलन में जुड़कर अरुंधति एक अंदोलनकारी के रूप में उभरी। वे बांध विरोधी आंदोलनकारीयों के साथ धरने, रैली व प्रदर्शनों में भी शामिल होती रही है। नर्मदा बचाओ आंदोलन से उनका जुड़ाव ही अदालत की अवमानना के आरोप में उन्हें दी गई सजा और जुर्माने का कारण बन गया।

बचपन से जुझारू हैं अरुंधति

विरोध में आवाज उठाने का गुण अरूंधति को विरासत में मिला है। उनका जीवन अपनी शर्तों पर जीने के लिए संघर्ष करती एक महिला की कहानी बन गया है। अरुंधति 16 वर्ष की उम्र तक ही मां के साथ रही है। उसके बाद वे अकेली दिल्ली आ गई, और फिरोजशाह कोटला क्षेत्र की एक तंग बस्ती में अकेली ही रहने लगी। उस समय अरुंधति बीयर की खाली बोतलें बेच कर अपना गुजारा करती थी और पढ़ाई भी। उन्होंने आर्किटेक्चर की पढ़ाई की, लेकिन यह व्यवसाय उन्हें जमा नहीं और उन्होंने छोड़ दिया। उन्होंने अपने साथी आर्किटेक्ट गोरार्ड ड कुन्हा से शादी की, लेकिन उनका दांपत्य अधिक दिनों तक नहीं चला। आत्मा की आवाज पर जीने वाली अरुंधति को उनके उपन्यास 'दि गॉड ऑफ स्माल थिंग्स' की जबर्दस्त अलोचना भी डिगा नहीं पाई। नर्मदा बचाओ आंदोलन से उनका जुड़ना भी कई लोगों को पसंद नहीं आया, लेकिन उन्होंने अपने कदम पीछे नहीं हटाए।

कमाई का नया तरीका

दिल्ली में शनिवार के दिन लोहे या टिन से बने टेढ़ीमेढ़ी आकृति वाले शनिदेव और उसके सामने रखे बक्से अस्पताल, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन आदि सार्वजनिक स्थानों के आसपास रखे हुए अवश्य मिल जाएंगे। जिन में अंधविश्वासी लोग शनिवार के दिन रूपया अवश्य चढ़ाते हैं। लोहे के बने शनिदेव पर चढ़ावा चढ़ाने वालों को कोई फायदा हो या न हो पर इसे रखने वालों की हर शनिवार के दिन अच्छीखासी कमाई हो जाती है।

दिल्ली में टिन के बने शनिदेवों को रखने का काम सुनियोजित ढंग से कुछ गिरोहों द्वारा चलाया जा रहा है। जिन स्थानों पर मोटी कमाई होती है उन स्थानों पर शनिदेव को रखने की बात पर गिरोहों के बीच झगड़ा होता भी देखा गया है। ऐसे मामले भी सामने आए हैं जब एक गिरोह ने तेल में डूबे शनि की आकृति रखी और दूसरे गिरोह वाले पैसे उठा कर ले गए, जिस की वजह से अब बक्सों का बाकायदा ताला लगा कर रखा जाता है। या उन की निगरानी के लिए किसी बच्चे को बैठा दिया जाता है।

आईटीओ, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन, पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन, अंतर्राज्यीय बस अड्डा जैसे भीड़भाड़ वाले स्थानों पर ऐसे शनि आकृतियों की भरमार होती है। हर 4 कदम पर डब्बे के साथ शनिदेव मिल जाएंगे। चूंकि इन जगहों पर भीड़ अधिक होती है। इसलिए यहां रखी गई आकृतियों पर अधिक चढ़ावा आता है। इस प्रतिनिधि ने शनि की आकृतियों व डब्बों की देखभाल करने वाले कई लड़कों (जिन की उम्र 10 से 12 साल होगी) से बातचीत की तो कोई भी ठीक से बात करने को तैय्यार नहीं हुआ। उन्होंने अपना जो नाम व पता बताया वह भी सही नहीं था। उन की बातों से ऐसा लगा जैसे किसी ने उन्हें सिखा पढ़ा रखा है। एक लड़के ने बताया कि इस डिब्बे की देखभाल करने के उसे 50 रूपये मिलते हैं। वह इस जगह पर बैठ कर 4 डिब्बों की देखभाल करता है।

आईटीओ पर एक ढब्बे की निगरानी करने वाले सोमनाथ ने बताया कि उस ने खुद यह डब्बा रख है। जब उसे पूछा गया "कितनी कमाई हो जाती है? तब उसके मुंह से निकल गया, "बताने के लिए मना किया है।"

बस स्टैंड पर डब्बा ताकने वाले वाले गिल्लू का कहना था, "मैं शनिवार के दिन स्कूल नहीं जाता। इस दिन मैं सुबह से शाम तक यहां रखे डब्बे की देखभाल करता हूं। मुझे इस काम के लिए 50 रूपये मिल जाते हैं।"

इन आकृतियों को रखने वालों की अच्छीखासी कमाई हो जाती है। मान लीजिए किसी गिरोह के संचालक ने 10 आकृतियां अलगअलग जगहों पर रखी हैं और एक जगह से दिन भर में 100 रूपये मिलते है। इस तरह 10 जगह से 1 हजार रूपये की कमाई हो गई। यदि उन डब्बों की देखभाल के लिए 4 बच्चे बैठा रखें हैं और उसे प्रति बच्चा 50 रूपये के हिसाब से यदि 200 रूपये देने पड़े तो भी उसे 800 रूपये की कमाई होती है।

आजकल इस तरह से गिरोह के सदस्यों द्वारा छोटेछोटे बच्चों से भीख भी मंगवाई जाती है। उन के हाथ में स्टील की एक छोटी सी बाल्टी थमा दी जाती है। जो बसों में चढ़ कर शनि महाराज के नाम पर पैसे मांगते हैं। एक तो कम उम्र, दूसरे शनिदेव के नाम पर मांगने की अपनी कला से बच्चे सुबह से शाम तक काफी पैसा कमा लेते हैं।

शनि की इन आकृतियों से होने वाली कमाई को देखते हुए गिरोह के संचालकों ने अब मंगलवार को हनुमान तथा साईबाबा के फोटो लगा कर उनके नाम पर भी पैसा मांगना शुरू कर दिया है। इस तरह की कमाई पहले सप्ताह मे एक दिन होती थी वह अब 3 दिन होने लगी है।

पुलिस इन आकृति रखने वालों के खिलाफ कोइ कानूनी कारवाई नहीं कर सकती क्योंकि यह काम भीख मांगने की श्रेणी में नहीं आता। इस का लाभ गिरोह के संचालक उठा रहे हैं। धर्म के नाम पर कितना बढ़िया धंधा है। टिन के बने शनिदेव और कागज के हनुमानजी व साईबाबा बैठे बैठाए इंसान की झोली पैसों से भर रहें हैं। धन्य हैं दिल्ली के पढ़ेलिखे लोग जो अठन्नी और रूपया दे कर अपने सिर से शनि का कोप शांत कर लेते हैं।

क्षमा मांगना बिगडी बात संवारता है

गलती भला किससे नहीं होती? पर एक गलती करने के बाद प्राय: उसे नकारने की, दूसरी फिर ढीठता जतलाने की तीसरी और इसी तरह एक के बाद एक कई गलतियां करके जहां हम अपने दिल पर बोझ ले लेते हैं, वहीं अच्छे भले आदमी संबंधों में भी दरारें पैदा कर लेते हैं।

खुले तौर पर गलती स्वीकार कर लेना व भविष्य में फिर न करने का वायदा करना जहां अपने हृदय की निर्मलता जतलाता है, वहीं आपसी संबंधों में दरार भी पड़ने नहीं देता।

सच्चे व निष्कपट दिल से गलती स्वीकार करके मांगी माफी बड़ा भारी असर करती है। यह व्यक्ति के उदार मन व उदार चरित्र की परिचायक है। 'माफ कर दीजिए' या 'क्षमा कीजिए', 'भूल हो गई' यह छोटा सा वाक्य उस ढेर सारी खटास, कड़वाहट को भुला देने में समर्थ है जो कभी संबंधों में किसी भी कारण से घुल गई थी। वह वाक्य संबंधों को फिर से सुधार, उनमें मधुर रस का श्रीगणेश भी सहज ही कर जाता है। कोई भी अनबन दरार जो किसी भी कारण से रिश्तों में आ गई हो जी को अशांत बनाये रखती है, बरसों से बने मधुर संबंध एक जरा सी भूल के कारण छिन्न भिन्न हो जाते हैं, ऐसे में यदि इस अनबन, अशांति को जड़ से काट फेंकना है तो अपनी गलती मान लेना सही तरीका है। गलती मानने से सामने वाले का तना दिमाग ढीला हो जाता है। सामने वाला भी खुले दिल से पूरी घटना को नये सिरे से सोचता है कि उसकी तरफ से चूक तो नहीं हुई थी?

कहना बड़ा आसान है कि गलती कर लेने पर या हो जाने पर माफी मांग लेने में क्या हर्ज है। हिचकिचाहट है पर सच यह है कि यूं ही माफी मांग लेना सहज नहीं है। इसे अपना अहम आहत होता

है, लगता है पूरी गलती हमारे सिर पर थोप दी गई, हम छोटे हो गये, हमारा अपमान हो गया। यह सब सोच माफी मांगने को जुबान नहीं खुलती। मनको बड़ी वेदना सी होती है। पर सच ये है कि एक बार साहस करके अपमान होगा परन्तु यदि इस तकलीफ को सह सकने की हिम्मत कर ली जाए और अपने अहम् को भुलाकर 'माफ कीजिए' कह दिया जाए तो लगेगा जी ठहर गया है, तूफान शांत हो गया है, दिल पर चढ़ा अपराध भाव-आशंका सब दूर हो गई है। जिस उदारता से खेद व्यक्त किया गया है, क्षमा याचना करी गई है, व्यक्ति इसी दिल से बड़ी से बड़ी भूल, नुकसान माफ भी कर देता है।

कहते हैं दूसरे को ईमानदारी का पाठ सिखाने से पहले हमें खुद को अपने प्रति ईमानदारी बरतनी चाहिए। हमसे भूल, अपराध हुआ या नहीं, यह कोई दूसरा जाने या न जाने हम बखूबी व बेहतर जानते हैं। तब व्यर्थ गलती छिपाने का उपक्रम कर दिल का बोझ ढोने से क्या लाभ? गलती हो गई सबसे होती है-हां भविष्य में सतर्क रहेंगे कि पुनः यही भूल न करें, और जब मन में ऐसा सोच ही लिया तब खुले आम गलती मान लेने में क्या हिचकिचाहट?

जो व्यक्ति सुलझे दिल दिमाग का होगा वह खुले विचारों का भी होगा। गलती कर भी देगा तो माफी भी झट मांग लेगा। मित्रों में लोकप्रिय भी बना रहेगा और संबंधों की मधुरता भी कायम रखेगा। ऐसा व्यक्ति टालमटोम नहीं करता, न ही व्यर्थ के बहाने बनाकर अपनी भूल को सही सिद्ध करने का प्रयास ही करता है, न ही वह भूल को खुद की नहीं, वक्त की, स्थिति की बदौलत बता उसे औरों पर थोपता फिरता है। वह साफ- साफ बिना सामने वाले को खिजाये, यह जतला देता है कि उससे भूल हो गई। उसे बेहद अफसोस है कि आपको कष्ट हुआ! साफ दिल से गलतियों को स्वीकार कर लेना छोटा हो जाना कतई नही है। गलती मान लेना व माफी मांग लेना टूटे रिश्तों को सिर्फ जोड़ता ही नहीं और भी पक्का करता है। लोग ऐसे व्यक्ति की तारीफ करते हैं कि वह गलती मान लेने में पीछे कदम नहीं उठाता।

(सुरजीत बराड़)

अमरीका में शुभ संग्राम

जैसे पहले नोटिस दिया गया है कि श्रीमान बलदेव सिंह जी 15 मई से अमरीका गए हुए हैं, वहां ठहरकर उन्होंने कई प्रकार का संग्राम किया है।

इंडियाना पुलीस में श्रीमान जी ने सुरजीत सिंह जी गिल के साथ हितकर बातचीत की। चण्डीगढ़ से आए एक जोड़े और पारिवारिक जनों को लेकर एक सभा की।

इंटरनैट पर और मैटर तैयार करके दिया गया। अंग्रेजी में भी धर्म सम्बंधी लेख लिखते रहे हैं। हिंदी पंजाबी की पत्रिकाओं के लिए भी मैटर भेजा गया।

लासएंजलिस के पास अपने गांव के एक

श्रद्धालु के पास गए। वह सब नशों और मांसाहार से बचे हुए हैं। उन्होंने बहुत आदर किया और खुशी प्रगट की। दोनों पत्रिकाओं को भेजने का अनुरोध किया।

टोरंटों में 8-15 जुलाई तक शुभ संग्राम किया। वहां श्रीमान बलवंत राए जी (सुपुत्र लक्ष्मी देवी जी) बीबी वीरवाला जी, बीबी रीटा जी (सरदार अतर सिंह जी की पड़पोती) श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी चहल, सब मिले, सबने बेहद सेवा की और खुशी मनाई। बलवंत राए जी और उनकी पत्नी पलपल पर अपनी खुशी प्रगट करते थे और उन्होंने 100 डालर दान में दिए। बीबी रीटा जी भी पूरी तरह नशों और मांसाहार से बची हुई हैं"। श्रीमान जी को मिलाने के लिए उन्होंने चार और परिवार बुलाए। यह परिवार बीबी वीरबाला जी से सम्बन्धित थे। बीर वाला जी के देवर देवरानी ने जो चण्डीगढ़ में रहते हैं, बहुत दिलचस्पी दिखाई और चण्डीगढ़ सभाओं में आने का नेक इरादा ज़ाहिर किया। जसविन्द्र सिंह जी चहल बावजूद घुटने में दर्द के उन्होंने बहुत सहयोग दिया। 10 पुस्तकें ली। तरह तरह के प्रश्न किए जिनका जवाब दिया गया। समाज की शिक्षा में उन्होंने गहरी दिलचस्पी दिखाई। उन्होंने 200 डालर और 1000 रूपये दान में दिए। बीबी वीर वाला जी ने 100 डालर दान में दिए। श्रीमान जी अपने एक मित्र सुशील सांवलका को मिले उनहोंने 151 डालर दान में दिए।

फिर श्रीमान जी अपनी भानजी स्वीट को मिलने गए, उन्होंने अमरीक सिंह जी के बड़े बेटे संतोख सिंह जी और उनकी बेटी पैम से बात करवाई।

श्रीमान जी कोशिश कर रहे हैं कि अमरीका में एक धार्मिक सोसाईटी के रूप में देव धर्म के प्रचार और साहित्य को फैलाने के लिए सोसाइटी रजिस्टर हो जावे।

श्रीमान जी के सब जगह जाने आदि के लिए उनका बेटा डॉक्टर देव अनुरूप बरार सब खर्च खुशी खुशी कर रहा है।

चण्डीगढ़ में भी श्रीमान जी की अवर्तमानता में धर्म सम्बंधी इतवार सभाएं मिलजुल कर करवाते रहे हैं।

सत्य धर्म बोध उत्सव

आपको यह जानकर खुशी होगी कि सत्य धर्म बोध उत्सव 24 सितम्बर से 26 सितम्बर 2004 तक धर्मशाला सैक्टर 18-डी, चण्डीगढ़ में चाव भाव से मनाया जा रहा है। इस मुबारक उत्सव से पहले चन्द दिन का खास सत्संग रखा जा रहा है। यह सत्संग 21 सितम्बर शाम से 24 सितम्बर सुबह तक जारी रहेगा और 24 सितम्बर की शाम 5.30 बजे सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा होगी।

आपकी सेवा में विनम्र प्रार्थना है कि आप न केवल स्वयं इस शुभ अवसर से लाभ उठावें बल्कि और अधिकारी आत्माओं को भी साथ लावें।

सम्मान भाव से प्रार्थी

बलदेव सिंह (मंत्री)

Regd. Postal No.Pb (0050) 2003
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

प्रोग्राम

24 सितम्बर शुक्रवार

प्रवेश सभा : 5:30 बजे शाम

विषय : सत्य धर्म की विशेषता।
सभा से लाभ उठाने की जरूरी शर्तें।
अगले दिन के प्रोग्रामों की सूचना।

25 सितम्बर शनिवार

पहली सभा : 8.00 बजे सुबह

विषय : आत्म अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ।

दूसरी सभा : 10:00 बजे

विषय : स्वास्तित्व सम्बंधी आदेशों का पाठ और व्याख्या।

तीसरी सभा : 5.30 बजे

विषय : भगवान देवात्मा के प्रभावों का अद्वितीय कारज।

26 सितम्बर इतवार

पहली सभा : 8.0 बजे सुबह

विषय : भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज, इस सम्बंधी हमारी जिम्मेवारियां। इस कारज के लिए धन और जन की अपील।

दूसरी सभा : 10.00 बजे

विषय : सभाओं से उठाए लाभ का यात्रियों की ओर से वर्णन।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

सम्पादक डा॰ विनोद खेड़ा

Book Posts